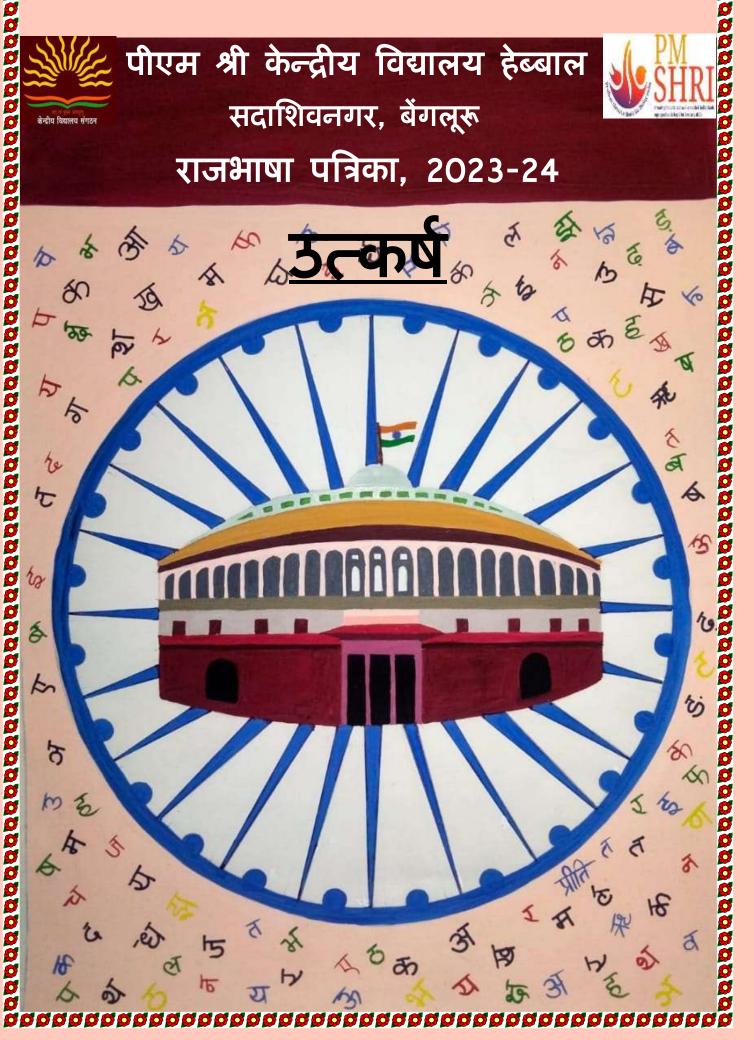


# पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल सदाशिवनगर, बेंगलूरू



राजभाषा पत्रिका, 2023-24



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल सदाशिवनगर, बेंगलूरू राजभाषा पत्रिका, 2023-24



उत्भिष

केन्द्रीय विद्यालय संगठन



राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष : श्री पी श्रीनिवास राजू प्राचार्य

> संपादक श्रीमती ज्योति स्नातकोत्तर शिक्षिका, हिन्दी

मुख्य पृष्ठ : श्रीमती प्रीती बैनर्जी प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका, कला

<u> उपायुक्त का सन्देश</u>

है।

मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल के कर्मचारी एवं विद्यार्थियों द्वारा अपने प्राचार्य के नेतृत्व में राजभाषा ई पत्रिका सत्र 2023-24 का सृजन एवं प्रकाशन किया जा रहा है। समग्र संभावनाओं से आप्लावित सुधि शिक्षक/शिक्षिका और विद्यार्थियों की कल्पनाशिक, अभिव्यक्ति के प्रतिबिम्ब सुजनात्मक विद्यालय की राजभाषा ई पत्रिका में सभी की प्रतिभा सामने उभरकर आई है जो अति प्रशंसनीय है। इसमें राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने हृदय के उद्गार, अपनत्व और लगाव को प्रकट किया गया है। यह पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि शिक्षार्थियों के सम्चित, सकारात्मक, सर्वांगीण एवं सृजनात्मक विकास हेत् विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध

इस पत्रिका के अवलोकन से लगता है कि हमारे विद्यार्थियों एवं शिक्षक/शिक्षिका में कितनी प्रतिभा छिपी है। जरूरत है एक मंच की जहाँ वे अपनी प्रतिभा के बीज को अंकुरित कर पल्लवित और पुष्पित कर सकें तथा ज्ञान-पुंज की नई ज्योति जगा सकें। यह पत्रिका वही मंच है जहाँ विद्यालय के समस्त सदस्य अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन कर पा रहें हैं।

मैं पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल के प्राचार्य, समस्त कर्मचारियों और विद्यार्थियों को इस पत्रिका के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूं तथा साथ ही यह कामना करता हूं कि राजभाषा हिन्दी की पवित्र सुजन की अमृतधारा निरंतर आगे बढ़ती रहे।

> धर्मेन्द्र पटले उपायुक्त केन्द्रीय विद्यालय संगठन, बेंगलूरू संभाग

# प्राचार्य का संदेश

मुझे इस बात का अपार हर्ष है कि पीएम केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल कर्मचारीगण एवं विद्यार्थियों ने पुनः सत्र 2023-24 में राजभाषा पत्रिका का सृजन किया है। यह निर्विवाद सत्य है कि पत्र-पत्रिकाएँ मानव मन मस्तिष्क में प्रस्फृटित विचारों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम ही नहीं बल्कि उसके के प्रचार-प्रसार का उत्कृष्ट मंच भी है और इसका उचित प्रयोग करने में हमारा हिन्दी-विभाग अनवरत प्रयासरत है। प्रस्तुत पत्रिका हमारे कर्मचारीगण और विद्यार्थियों का हिन्दी के प्रति प्रेम प्रकट करता है। सभी ने अपने मन के उद्गारों को राजभाषा हिन्दी में उद्धत किया है। राजभाषा ई पत्रिका के प्रकाशन के लिए सभी विद्यार्थिगण एवं केन्द्रीय विद्यालय कुटुंब को तहेदिल से बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ । आशा और विश्वास है कि हिन्दी के प्रति हमारा समर्पण आपको पसंद आएगा और पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल राजभाषा हिन्दी को समृद्ध बनाने के अपने प्रयास को हमेशा जीवंत रखेगा। जय हिन्द, जय हिन्दी।

> श्री पी श्रीनिवास राज् पाचार्य पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल

संपादक की कलम से......

अपार प्रशंसा का विषय है कि विद्यालय की सत्र 2023-24 की नव-सृजित राजभाषा पत्रिका आपके सम्मुख प्रस्तुत हो रही है जिसमें पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल कुटुंब ने अपने सृजनात्मक कौशल एवं जीवन के अनमोल अन्भवों का परिचय दिया है। इस पत्रिका



का सृजन प्राचार्य महोदय की नई सोच, कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है। विद्यालय की साहित्यिक प्रतिभा जिन्हें मंच नहीं प्राप्त होता या जो मुखरित होने से झिझकते हैं, उनमें आत्मविश्वास का संचरण और उनकी साहित्यिक प्रतिभा को लेखनी के माध्यम से मंच प्रदान करने का सशक्त माध्यम यह पत्रिका है |

हम इस राजभाषा पत्रिका के प्रकाशन में निरंतर निखार लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका वर्तमान एवं भावी विद्यार्थियों एवं युवाओं में उर्जा का संचार करेगी व रचनात्मक क्षमता के विकास के लिए एक नयी दिशा भी प्रदान करेगी । हमारी अपनी अभिव्यक्ति की यह पत्रिका अब आपके समक्ष है जिसके संशोधन, परिवर्धन के लिए आपके सुझावों का स्वागत रहेगा। शुभकामनाओं सहित-----

> ज्योति स्नातकोत्तर शिक्षिका, हिन्दी

## जानवरों के बारे में तथ्य



1.डॉलिफन पानी के नीचे भी 24 किलोमीटर की दूरी तक सुन सकती है।

- 2.ब्लू व्हेल बिना खाये 6 महीने तक ज़िंदा रह सकती है।
- 3.सी हॉर्स इकलौती ऐसी मछली है जो बिलकुल सीधी तैरती है।
- 4.बिच्छू की लगभग 170 प्रजातियां सिर्फ साउथ अफ्रीका में पाई जाती है।
- 5.कंगारू पानी में भी आसानी से तैर सकता है।
- 6.हमिंग बर्ड न केवल आसमान में उल्टा उड सकती है बल्कि हवा में उल्टा लटक भी सकती है।
- 7.हिप्पोपोटामस अपने मुँह को 180 डिग्री तक खोल सकता है।
- 9.एक हाथी अपनी सूंड में लगभग 5 लीटर तक पानी स्टोर करके रख सकता है।
- 10. खरगोश एक मिनट में लगभग 120 बार खाना चबाता ।
- 11. पेंगुइन एकमात्र ऐसा जीव है जिसमे खारे पानी को मीठा करने की क्षमता है।
- 12. चमगादड़ कभी चल नहीं सकता, ये सिर्फ चिपक सकता है और उड़ सकता है.
- 13.जेलिफ़िश का 95% शरीर पानी का बना होता है इसलिए यह धूप में भाप बनने लग जाती है.
- 14.तितलियां किसी भी चीज़ का स्वाद अपने पैरों से चखती है.
- 15.पोलर बेयर सफ़ेद दिखाई देते है लेकिन उनकी त्वचा काली होती है.



वीराज्योत्सना , 12 'अ'

# गाँधी जी के बारे में कुछ रोचक तथ्य

 महात्मा गांधी को राष्ट्रिपता की उपाधि नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने दी थी।



- 2. गांधी जी को बापू की उपाधि रवींद्रनाथ टैगोर ने दिया था।
- 3. गांधी जी की किताब ' द एक्सपेरिमेंट विद हुथ' को अंग्रेजी में अनुवाद महादेव देसाई ने किया था
- 4. टाइम मैगजीन 'पर्सन ऑफ द ईयर' उन्हें 1930 को मिला था
- 5. उन्होंने 1906 को ब्रह्मचारी बनने का फैसला किया था
- 6. गांधीजी को पॉलीटिकल गुरु का दर्जा गोपाल कृष्ण गोखले ने दिया था
- 7. संयुक्त राष्ट्र ने 2007 में गांधी के जन्मदिन, 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में घोषित किया।
- 8. गांधी जी को 5 बार नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था लेकिन कभी नहीं मिला।
- 9. पूर्व बिड़ला हाउस के बगीचे में मोहनदास करमचंद गांधी की हत्या कर दी गई थी।
- 10.महादेव देसाई गांधी के निजी सचिव थे।



नेहा यादव, 12 'अ'

# हम इंसान हैं हम एक हैं

हम इंसान हैं हम एक हैं जब मुल्ला को मस्जिद में राम नजर आए, जब पंडित को मंदिर में रहमान नजर आए, सूरत ही बदल जाए दुनिया की अगर इंसान को इंसान में इंसान नजर आए अनेकता में एकता यह भारत की विशेषता है दे सलामी इस तिरंगे को जिसमें तेरी शान है सर हमेशा ऊंचा रखना इसका जब तक दिल में जान है हम एक हैं, हम महान हैं हम इस देश की शान हैं देखे इंसान में इंसान को , भूल जाए मन के भेद-भाव, भूल जाए जात-पात को, भूल जाए धर्म को, चलो हम इंसान हैं, हर इंसान में, इंसान को देख



पीयूष, 12 'अ'

# <u> प्लास्टिक: एक दुविधा</u>

एक बार की बात है ,एक किसान किसी गांव में रहता था। उसका नाम अल्गू था। उसके पास एक बहुत प्यारी गाय थी उसका नाम कमला था। उसका रंग दूध सा गोरा था। परंत् कमला के पीठ में डंडे के निशान थे जो यह साफ-



साफ बता रहे थे कि अल्गू बहुत मतलबी है। उसने अपनी गाय से कभी अच्छे से बर्ताव नहीं किया। परंतु कमला उससे पूर्णतः विपरीत होकर हमेशा सोचती थी कि अल्गू से अच्छा मालिक पूरे विश्व में नहीं है। बहुत दिन बीते अल्गू वृद्ध हो चला था और अंत में मृत्यु को प्राप्त हो गया । अल्गू का बेटा बचपन में तो गाय से बहुत प्रेम करता था परंतु जब बड़ा हुआ तो उसे गाय की देखरेख करने की फुर्सत नहीं थी। तो उसने इस काम का जिम्मा अपनी मां को दे दिया उसकी मां श्यामा रोज अपने हिस्से का खाना कमला को खिला देती थी । जिसके कारण बीमार होकर ,कुछ दिन बाद श्यामा भी स्वर्ग सिधार गई। अब कमला की आंखों में सिर्फ आंसू रहते थे परंतु अल्गू का बेटा इस सोच में था कि कमला का करें तो क्या करें। तभी उसे अपने दोस्त हरी की याद आई जो एक गाय की तलाश में था। हरी का गांव अल्गू के गांव से दूर और शहर के पास था। कमला हुरी के यहां अच्छे दामों में बिक गई। कमला को हुरी के पास जाने के बाद श्यामा की याद आने लगी उसे यह याद तब आती थी जब उसे कम चारा दिया जाता था और अगर कमला ने थोड़ा कम दूध दिया तो उसे निर्जीव वस्तु की तरह मारा जाता था। अब जैसी कमला की आंखों के आगे अंधेरा छा चुका था। कमला अब हर वक्त सोचती थी कि किसी तरह उसे इस काल कोठरी से छुटकारा मिल जाए तभी एक दिन हुरी ने गठशाला का दरवाजा खुला छोड़ दिया और एक बच्चा गठशाला में आकर कमला के गले की रस्सी खोल दी। मौका पाते ही कमला ने गउशाला का त्याग कर दिया वहां से भाग गई। कमला के लिए तो जैसे वह बच्चा भगवान का रूप था। चलते-चलते कमला शहर में पहुंच गई वह खाने की तलाश में इधर-उधर भटकती रही परंतु उसे क्या पता था कि यह शहर है। गांव की तरह हरियाली उसे या नहीं मिलेगी वह दिन कमला को भूखे ही बिताना पड़ा। अगले दिन कमला फिर भोजन की तलाश में निकली तो उसे रास्ते में भोला बैल मिल गया जो हुरी के यहां से दो महीने पहले भाग गया था दोनों

एक दूसरे को पहली नजर में पहचान गए और अति प्रफुल्लित हुए दोनों एक साथ रहते खाते पीते उठते बैठते दोनों एक दूसरे के परम संगी हो चुके थे।

एक दिन जब वह दोनों भोजन की तलाश में थे तो भोला बैल ने कमला से बोला भोला:-कमला री कमला यह चमकीली कागज की चीज दिखती है इसे कभी मत खाना कमला:-अरे हां दिख रही है पर क्यों नहीं खाए, क्या इसमें भी मनुष्य का हाथ है। भोला:-हां, मानव नहीं तो क्या हम बनाएंगे। पहले इन्होंने प्रदुषण फैलाया अब पील... हां प्लास्टिक बना रहे हैं। तू जानती है कुछ ही दिन पहले एक बछड़ा इसे खा कर मर गया था

कमला:-बाप रे यह तो बह्त खतरनाक चीज है दोनों की जिंदगी अच्छी चल रही थी पर बेचारी कमला के जीवन में सुख कहां था एक दिन खाने की तलाश में भोला ने प्लास्टिक खा लिया। प्लास्टिक सीधा जाकर उसके गले में अटका वह कमला से जाकर बोला

भोला:-कमला अब मैं नहीं बचुंगा मैंने प्लास्टिक खा लिया है। कमला:-अरे ऐसा न कह, अगर तू मर जाएगा तो मैं भी नहीं बचूंगी।

धीरे धीरे भोला की हालत बिगड़ी और वह स्वर्ग सिधार गया। भोला से बिछड़ने के बाद कमला भी ज्यादा दिन जीवित न रह सकी ।

कुछ ही दिनों में इतने सारे जानवर की प्लास्टिक के कारण मृत्यु देखकर आम जनता धरने पर बैठ गए परंतु यह देख कर हैरानी होती है कि धरने पर बैठे लोग प्लास्टिक की बोतल से पानी पी रहे थे।

कमला और भोला की तरह करोड़ों जानवर प्लास्टिक के कारण एक साल में मर जाते हैं। इसलिए हमें ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे प्लास्टिक की प्रभाव कम हो और बेजुबान जानवर ना मरे।।



स्वाती, 11 'अ'

### छात्र जीवन

छात्र जीवन अब बन गया एक तंग रास्ता, पढ़ाई की दवा बन गयी, सबकी हसरत जैसी । परीक्षा का दिन, तनाव का बहाना, धड़कनें बढ़ जाती हैं, मानो ये जिद्दी ज़माना।

पेपरों की छाया में, नींद चुराती रातें, पढ़ाई के बोझ में, छात्र खो जाते राहतें।

> प्रोजेक्ट्स, असाइनमेंट्स, और एक कई क्लॉन, आत्म-संतुष्टि की कहानियाँ, बन गई अद्भुत क्लोन।

सोचो न अब, ये तनाव और चिंता, सफलता का रास्ता है ये, न कोई आपदा न चिंता ।

> पढ़ाई करो दिल से, और आत्म-विश्वास बनाओ, सपनों को पाने के लिए, अपना रास्ता स्वयं बनाओ।

स्ट्रेस और चिंता को, दूर भगाओ तुम, छात्र जीवन को आनंद से भरो, और हर समस्या के लिए चुनौती बनो तुम।

स्धन्वा, '11'अ



# प्रकृति है बड़ी सुंदर!

चाहे वह हो नदी तालाब या हो कोई फूल गुलाब या हो हरियाली सी चादर प्रकृति है बड़ी सुंदर!



जब देखें हम आसमान नीला या देखें हम उसे लाल - पीला या आए सूरज सुबह निकलकर प्रकृति है बड़ी सुंदर!

चाहे हम देखें दिन का नज़ारा या रात का दृश्य भी है प्यारा बरसात का माहौल भी है रुचिकर प्रकृति है बड़ी सुंदर!



वाई. एन. वी. श्रीललिता, 10 'द'

# <u>"कल्पना के रंग में डूबा शहर"</u>

कल्पना की इस नगरी में, रंग बिरंगे घर बसे, हर गली, हर चौराहा, खुशियों से सजे।



सूरज की पहली किरण से, शहर जगमगाए, चाँदनी रात में भी, सपनों के दीप जलाए।

पेड़ों की छाँव में, बच्चे खेलें कूदें, हर मोड़ पर मिले, प्रेम के फूल खिले। नदियों का पानी, शीशे सा निर्मल, गुनगुनाती हवाएँ, ले आए नई हलचल।

इस शहर में हर दिन, नई कहानी रची जाती, हर राह पर खुशियों की, नई मीठी बाती जलाई जाती।



रुचिका यादव

# डेंगू से बचाव



सोनू के घर मच्छर आया मच्छर ने सोनू को खाया। गुमसुम होकर हुआ उदास, माँ लाई डाक्टर के पास।

डाक्टर ने फिर टेस्ट कराया टेस्ट में उसको डेंगू पाया । झोला भरकर दी दवाई आराम करने की सजा सुनाई ।

सोनू को अब तेज बुखार सब पूछें क्यों हुआ बीमार । माँ कहती, मैं खूब खिलाती, सुबह शाम तो दूध पिलाती ।

फल, मेवे, बादाम है खाता सुबह शाम ये दौड़ लगाता । न जाने क्यों हुआ बीमार पापा से करती थी विचार ।

तभी गयी मैं सोनू के पास , पाया वहाँ सभी को उदास । घर में गमले, खुली थी नाली, खिड़की पर भी नहीं थी जाली । आवाज लगाकर सबको बुलाया स्वच्छता का महत्त्व समझाया । गमलों को खाली करवाया खिडकियों को बंद करवाया ।

पानी जहां – जहां है जमता मच्छर का वहीं लारवा पलता । बच्चे पहने पूरे कपडे तो बीमारी न इनको जकडे ।

अगर रखोगे ये सारी सावधानी, न होगी फिर ये कभी परेशानी । चलो सभी को यह बताते हैं, भारत को 'डेंगू मुक्त' बनाते हैं।



वैष्णवी शिशौदिया, 9 'ई'

# छात्रों का मानसिक स्वस्थ्य : दार्शनिक

#### परिचय:

छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उनके मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य की स्थिति को संकेत करता है। यह उनके विचारों, भावनाओं, आत्म-समर्पण और आत्म-समझ को संकेत करता है। छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके शिक्षा, सामाजिक जीवन और आम जीवन को प्रभावित कर सकता है।

#### छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य पर दर्शन:

- <u>मिशेल फूकोः</u> फूको ने सामाजिक संरचनाओं की आलोचना की जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में शामिल हो सकती हैं। उनका मानना था कि संस्थान, जैसे की शिक्षा, व्यक्तियों पर नियंत्रण बना सकते हैं, जो उनकी मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं।
- जीन-जाक रूसो: रूसो ने प्राकृतिक शिक्षा की महत्वता को जोर दिया और विश्वास किया कि सामान्य शिक्षा छात्र की मानसिक और भावनात्मक विकास को दबा सकती है। उन्होंने व्यक्तिगत, अनुभवशील शिक्षा की प्रोत्साहनीयता की।
- सिगमंड फ्रॉयड : फ्रॉयड के अनुसार, छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उनके अन्तर्निहित इच्छाशक्ति और उनकी समस्याओं के परिणामस्वरूप होता है। उनका कहना था कि मानसिक समस्याएं बाह्य प्राथमिकता देने वाले कारणों से उत्पन्न होती हैं।
- <u>जॉन इय्वी : इ्यू</u>वी का मानना था कि शिक्षा को विश्वासी, समझदार और समाजसेवी नागरिक बनाने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए वह सामाजिक संवेदनशीलता और सहयोग की महत्वता को जानते थे।
- इम्मानुएल कांट: कांट के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगतता और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा से व्यक्ति की सोचने की क्षमता में सुधार होना चाहिए, जिससे वह समस्याओं का सामना कर सके।

निष्कर्ष: इस विषय पर कहा जा सकता है कि छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य उनके आत्म-समर्पण, रूचि, और स्वतंत्रता के साथ जुड़ी होती है। विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोन से हमें यह सिखने को मिलता है कि शिक्षा में स्वतंत्रता, समर्पण, और सहायता का महत्व है। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची - Active Minds - <a href="https://www.activeminds.org">https://www.activeminds.org</a>:





यशिता, '9' 'ई

### शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए, सही तरह चलना सिखाए। मात-पिता से पहले आता, जीवन में सदा आदर पाता।



सबको मान प्रतिष्ठा जिससे, सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे । कभी रहा न दूर मैं जिससे, वह मेरा पथदर्शक है जो । मेरे मन को भाता, वह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर, स्वभाव में सदा गंभीर, मन में दबी रहे ये इच्छा, काश में उस जैसा बन पाता, जो मेरा शिक्षक कहलाता।



आशुतोष पांडा, 9 'ई'

# <u>मेघ आए</u>

मेघ आए किसानों के जीवन में खुशियां लाए वह चले जाए, ऐसा हम सोच ना पाए।



वह शहरों में आए तो हम घरों में छिप जाए न भींगे इसकी चाह लगे। पर शहर के लोग क्या जाने गांव में मेघ आए तो लोग बोले, "वाह" मेघ आए तो गांव में दामाद आए। मेघ के बिना दुनिया है हमारी अधूरी वह आकर करें हमारी अधूरी जिंदगी को पूरी मेघ आए तो याद आए बस एक ही गाना, धीरे-धीरे से मेरी जिंदगी में आना। मेघ के बिना द्निया नहीं, इसलिए हमें उसे,खूब आदर है देना,



ख़ुशी पराशर, 9'ई'

मेघ अपने में ही है एक सौंदर्य, हमें बताएं सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ।

### बचपन

ये बचपन है बड़ा सुहाना, सुनते हैं हम बचपन बड़ा नादान होता है। नन्हें-नन्हें हाथों से बड़ी शैतानी करते,

> मां हमें खाना खिलाती, पापा हमें खिलौने दिलाते। रोते रहते, हंसते रहते यह ही बचपन का है खेल,

मम्मी-पापा को परेशान करते, बार-बार हम करते मांग। तब भी हम खाते मार,

> पर फिर भी लोग क्यों कहते, ये बचपन है बडा सुहाना।



उड़ने दो परिंदों को अभी शोख़ हवा में

मनीषा.डी.सी

## मेरा परिवार

मेरा परिवार, संयुक्त परिवार होने के बाद भी सुखी परिवार है तथा मैं खुश हूँ कि मेरा जन्म इस संयुक्त परिवार में हुआ। जिसमें परिवार के माध्यम से ही हम हमारे बचपन में जीवन के उन महत्वपूर्ण बातों



को सीख पाए जिन्हें हम किताबों के माध्यम से शायद ही कभी सीख पाते। मेरे माता-पिता दोनों ही विद्यालय में अद्यापन का कार्य करते हैं। उनके घर पर न रहने के दौरान दादा-दादी के साथ अनेक विषयों पर मेरी और मेरे भाई बहनों की चर्चा होती है, जो काफी रोचक होती है। इसके अलावा हमारे पास हमारा एक कृता भी है, जो हमारे परिवार का ही हिस्सा लगता है। परिवार व्यक्ति को बाहरी बुराईयों तथा खतरों से सुरक्षा प्रदान करता है अर्थात व्यक्ति परिवार में सभी प्रकार के बाहरी आपदाओं से सुरक्षित होता है साथ ही व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास परिवार की ही देन है। परिवार बच्चे के लिए एक खुशहाल तथा सुरक्षित वातावरण का निर्माण करता है तथा हमारी सारी अपेक्षाएं, ज़रुरतें परिवार के माध्यम से ही पूरी होती है। मेरा परिवार एक मध्यम वर्गीय परिवार है, पर उसके बाद भी मेरे माता-पिता मुझे और मेरे भाई बहनों की हर आवश्यकता को पूरा करने का पूरा प्रयास करते हैं। परिवार से मिलता स्नेह और मेरे प्रति उनकी चिंता मुझे मेरे परिवार के और समीप ले जाता है तथा मेरे परिवार के प्रति मेरी ज़िम्मेदारीयों का एहसास कराता है। व्यक्ति अपने ज़िम्मेदारियों को वहन करने की आदत से समाज का भी ज़िम्मेदार नागरिक बनता है। परिवार के सारे लोग मुसीबत के समय एक साथ मिलकर मुसीबत का सामना करते हैं।

निष्कर्ष: अपना परिवार व्यक्ति के लिए अपना संसार होता है, उससे वह संस्कार, अनुशासन, स्वच्छता, संस्कृति तथा परंपरा व इसी प्रकार के अनेक आचरण सीखाता है। अपने जीवनकाल में व्यक्ति क्या प्राप्त करता है यह उसके परिवार पर काफी हद तक निर्भर करता है। तथा इसी प्रकार से देश के निर्माण में भी परिवार एक आधारभूत भूमिका निभाता है।



दीपिका एम, 8

1. मेरे पास शहर है लेकिन घर नहीं, मेरे पास पहाड़ है लेकिन पेड़ नहीं, मेरे पास पानी है लेकिन मछली नहीं मैं कौन हूँ?

उत्तर : नक्शा

2. ऐसा क्या है जो हमेशा आपके सामने रहता है लेकिन दिखाई नहीं देता?

उत्तर: भविष्य

3. कटोरे पे कटोरा बेटा बाप से भी गोरा

उत्तर : नारियल

4. जब मैं छोटा होता हूँ तो मैं लंबा होता हूँ और जब मैं बूढा होता हूँ तो छोटा होता हूँ। मैं कौन हूँ?

उत्तर: मोमबत्ती

5. आँखें हैं पर देख नहीं सकती, पैर है पर चल नहीं सकती, मुँह है पर बोल नहीं सकती । मैं कौन हूँ?

उत्तर: गुड़िया



श्रीनिधि वाई, 6 'द'

# नदी कहती है

हे मानव ! लोगों ने क्या कहा ? क्या मैं नदी हूँ ? नहीं, अब नहीं। नदी थी। मैं सुंदरी थी, सालों पहले। मेरी संतानें, मेरी खूबसूरती सब कितनी अच्छी थी। वे सब अब कहाँ ? मेरी संतानें ! क्या वे मर गईं ? नहीं, तुम लोगों ने उनको मारा। तुम्हारा हस्तक्षेप, मैं सह नहीं सकती। मैंने गोद में बिठाकर सबको प्यार किया, प्यास बुझाया, गीत सुनाती मंद पवन से सुलाती। लेकिन आप लोगों ने क्या किया ? मुझे मारा, अब मैं कुरूप हूँ। हे मानव! मुझ पर कूड़ा कचरा मत डालो। विष मत पिलाओ। मुझे जीने की इच्छा है। आप के लिए, सब के लिए।



गायत्री. वी,6 'द'

# नमो जी को मेरा नमन

सब कहें चायवाला बन गए पीएम, मैं कहूँ बुद्धिजीवी बन गए पीएम, दस साल में तो नवजात शिशु, सिर्फ अपने परिवार से घुल-मिलता है, परंतु नमो जी तो पूरे संसार से घुल-मिल गए। न स्वार्थ, न लोभ मात्र भारत को सबसे महान बनाने का ध्येय। प्रगति की ओर कदम बढाएं. हर नागरिक को जीने का सलीका सिखाए. देश को करोना से बचकर निकालने का किया प्रयास. द्निया को दवाई से इलाज करवाए । नारी के सशक्तिकरण की योजनाओं से, औरतों के बदुओं को स्वाभिमान से भर दिया अपने मन की बात सभी तक पहुँचाई, किसानों को रोज की थाली भरने का सम्मान दिलाया. परीक्षा के भय को दूर कराया, बच्चों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के संग परीक्षा पर चर्चा कराया, वैज्ञानिकों का हौसला बढ़ाया, तब चंद्रयान आकाश में ओझल हो गया, चाय की तारीफ करूँ तो सिर्फ तीन चीजें. चायवाले की तारीफ करूँ तो हजारों व्यंजन. हर कदम में अपनी अमिट छाप छोडकर, सेल्फी के माध्यम से अपने-आप को निखारा. भारत को स्वच्छ बनाया, माँ-बहनों के लिए शौचालय बनवाया, चुटकी में अर्थव्यवस्था सुधारा, विद्या के क्षेत्र में नवीनीकरण अपनाया,

हजारों विद्यालय को पीएम श्री का दर्जा दिलवाया, देशवासियों के सपनों को संवारा, रामलला का विश्व को दर्शन कराया. हनुमान के जैसे अपनी अपार बुद्दिशक्ति से, द्निया को भारत का विश्व गुरु रूप दिखाया क्या-क्या तारीफ करूँ नमो के अपार संस्कार की, धन्य है वो माँ जिन्होंने नमो जैसे सपूत को भारत माँ की गोद में दिया।



श्रीमती एच आर श्यामला स्नातकोत्तर शिक्षिका(जीव विज्ञान)

## हिन्दी भाषा के बारे में कुछ रोचक तथ्य (Facts About Hindi Language)

संस्कृत भाषा से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से पुरानी हिन्दी और पुरानी हिन्दी से आधुनिक हिन्दी का विकास हुआ है जिसे आज हम बोलते है। हालांकि इसे लेकर मतभेद है कि अपभ्रंश से हिन्दी का विकास हुआ है

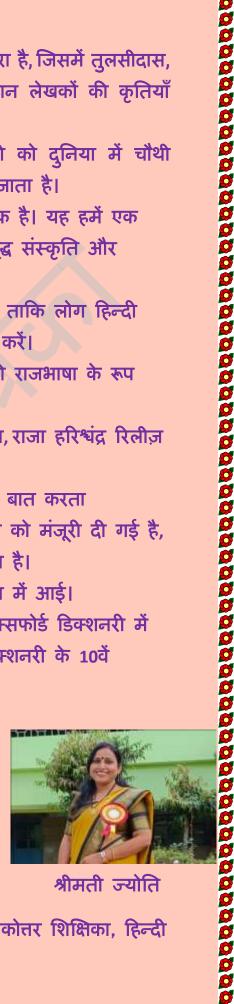


या पुरानी हिन्दी से। मगर वर्तमान भाषाविज्ञानी इसे अपभ्रंश से ही विकसित हुआ मानते है। हिन्दीभाषा से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों का संकलन निम्नवत है-

- 1. हिन्दी भाषा का नाम फारसी शब्द "हिंद" से आया है, जिसका अर्थ है "सिंधु नदी की भूमि"।
- 2. मशहूर कवि अमीर खुसरों ने सबसे पहले हिन्दी की कविता लिखी थी। हैरानी होगी हिन्दी भाषा के इतिहास पर पुस्तक लिखने वाले पहले लेखक भारतीय नहीं, बल्कि फ्रांसीसी थे, जिनका नाम Grasim the Taisi था।
- 3. हिन्दी भारत की राजभाषा है और इसे 22 राज्यों और 9 केंद्र शासित प्रदेशों में आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- 4. हिन्दी नेपाल, फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद और टोबैगो में भी आधिकारिक भाषा है।
- 5. दुनिया भर में लगभग 600 मिलियन लोग हिन्दी बोलते हैं। भारत के अलावा 21 अन्य देशों में भी हिन्दी भाषा बोली जाती है। पाकिस्तान, श्रीलंका, मालदीव, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, जापान, ब्रिटेन, जर्मनी, भूटान, नेपाल, बांग्लादेश, म्यांमार, इंडोनेशिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, यमन, युगांडा, कनाडा और फिजी जैसे देशों के लोग हिन्दी में बात करते हैं।
- 6. हिन्दी एक बहुत ही समृद्ध और प्राचीन भाषा है। इसकी उत्पत्ति संस्कृत से हुई है और इसमें कई अन्य भाषाओं, जैसे फारसी, अरबी, तुर्की और अंग्रेजी के शब्द शामिल हैं।

7. हिन्दी भाषा में एक बह्त ही विशाल साहित्यिक परंपरा है, जिसमें तुलसीदास, रवींद्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद और निर्मल वर्मा जैसे महान लेखकों की कृतियाँ शामिल हैं।

- 8. मंदारिन चीनी, स्पेनिश और अंग्रेजी के बाद हिन्दी को द्निया में चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली पहली भाषा माना जाता है।
- 9.हिन्दी भाषा भारत की एकता और अखंडता की प्रतीक है। यह हमें एक राष्ट्र के रूप में एकजुट करती है और हमें हमारी समृद्ध संस्कृति और विरासत से जोड़ती है।
- 10.हर साल 14 सितंबर से हिन्दी दिवस मनाया जाता है ताकि लोग हिन्दी भाषा के महत्व को समझ सकें और इसे प्रोत्साहित करें।
- 11.14 सितंबर 1949 को भारत सरकार ने हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।
- 12.1913 में, दादा साहब फाल्के द्वारा पहली हिन्दी फिल्म, राजा हरिश्वंद्र रिलीज की गई थी।
- 13.भारतीय संविधान का भाग xvII राजभाषा के बारे में बात करता है।अन्च्छेद 343 के तहत, संघ की आधिकारिक भाषा को मंजूरी दी गई है, जिसमें देवनागरी लिपि में हिन्दी और अंग्रेजी शामिल है।
- 14.आधुनिक देवनागरी लिपि 11वीं शताब्दी में अस्तित्व में आई।
- 15.आधार, डब्बा, हड़ताल, शादी जैसे 26 अंग्रेजी शब्द ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में जोड़े गए। जनवरी 2021 में लॉन्च हुए ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के 10वें संस्करण में 384 भारतीय अंग्रेजी शब्द हैं।
- 16. साल 2009 में गूगल ने अपने सर्च इंजन में हिन्दी भाषा शुरू की थी।



श्रीमती ज्योति

स्नातकोत्तर शिक्षिका, हिन्दी

## रावणविरचित श्रीशिवताण्डवस्तोत्र का यह

जटा-अरण्य से बहे महाजल-प्रवाह से । पवित्र जो गला वहीं विशाल सर्पमालिका । डमङ्डमङ्डमड डम्मरू-निनाद में करे। महेश ताण्डव प्रचण्ड, दें हमें पवित्रता ।।१।। जटा-कडाह में सवेग घुमते जलौघ की । स्चञ्चला तरंग-बेल शोभनीय भाल में । धधक् धधक् भभक् रही ललाट-अग्नि, जो धरे किशोरचन्द्र शीर्ष में, लगाव हो सदा मुझे ।।२।। धरा-धरेन्द्र-नन्दिनी-शिरस्थ भूषणालि से । प्रकाशमान दिग-दिगन्त देख के प्रसन्न जो । कृपाल् दृष्टि से विपत्ति घोर दूर जो करे। दिगम्बराख्य तत्त्व में रहूँ प्रसन्नचित्त मैं ।।३।। जटा-भुजङ्ग की फणी-मणि-प्रभा प्रकाशती । दिशा-य्वांगना म्खाग्र को कदम्ब-रंग में । मदान्ध हस्ति के सकम्प चर्म उत्तरीय से । तैलवर्ण भूतनाथ से रखूँ लगाव मैं ।।४।। सुरेश्वरादि देवता-शिरस्थ-पृष्पधूलि से । पदद्वयस्थ पाद्का हि धूसरीत हो रही । जटा-लटें निबद्ध, नागराज-हार में वहीं। चकोरबन्ध्-शीर्षधारि स्थायि श्रेय दें हमें ।।५।। ललाट-वेदि-जात-अग्नि-तेजपुञ्ज से किया । विनाश कामदेव का, स्रेन्द्र भी जिसे नमे । स्धांश् की कला-स्शोभिता किरीट-युक्त जो । विशाल भाल युक्त शीर्ष, सम्पदा अपार दें ।।६।। करालभालपट्ट में धधक् धधक् धधक् जली । प्रचण्ड आग में हुआ हुताग्न कामदेव भी । धराधरेन्द्र-पुत्रि के कुचाग्र को चितारने । सुयोग्य शिल्पि जो, उसी त्रिनेत्र से लगाव हो ।।७।। नवीनमेघमाल से घिरी अमार्धरात्रि के । दुरूह अन्धकार सा कलङ्क कण्ठ में जिसे । लपेटता गजेन्द्रचर्म, विश्वभार धारता । सुकान्त चन्द्र सा, जलौघधारि श्रेय-वृद्धि दें ।।८।। प्रफुल्ल नीलकञ्जवृन्द की प्रभान्वर्तिनी । मृगीछबी समान चिह्न से सजा सुकण्ठ है।



अनङ्ग-हस्ति-यज्ञ-ध्वंसका ! त्रिपूर ध्वंसका । भवान्धकारध्वंसका । व मृत्युध्वंसका । भज्रूँ ।।९।। अमानिनी भवानि की कला-कदम्ब-मञ्जू के । पराग-माध्रीय पान में समर्थ भृङ्ग जो । अनंग-यज्ञ-अन्तका ! पुरान्तका ! यमान्तका । गजान्तकान्धकान्तका ! तुम्हें भजूँ भवान्तका ।।१०।। शिरस्थस्थान में सवेग घूमते भूजङ्ग के । फ्फक्क से ललाट-अग्नि फैलती धधक्धधक्। धिमिद्धिमिद मृदङ्ग के प्रचण्ड घोष में करें। महेश ताण्डव प्रचण्ड, शम्भु हे ! जयोस्तु ते ।।११।। शिला-बिछौन में तथा भुजङ्ग-मुक्तमाल में । अमूल्यरत्न-लोष्ठ में व शत्रु-मित्र-पक्ष में । तृणारविन्दनेत्र में, तथा प्रजा-नरेश में । समान भाव से सदाशिवार्चना करूँ कदा ।।१२।। स्रम्य भावयुक्त चन्द्रमौलि धार चित्त में । निवास गंगतीर के निकुञ्ज में करूँ कदा । विकार-मुक्त, हाथ जोड़ शीर्ष में धरे हए । 'शिवेति' मन्त्र में जपूँ तथा सुखी बनूँ कदा ?।।१३।। सदा यही सुश्रेष्ठ स्तोत्र जो पढ़े, स्मरे, कहे । उसे हि देवश्रेष्ठशम्भ्-भक्ति शीघ्र ही मिले। रहे सदाहि शुद्ध और गति विरुद्ध ना उसे । मनुष्यमोह नष्ट शीघ्र ही करे शिवस्तुति ।।१४।। पूजोपरान्त हि दशानन-गीत ऐसा । गाता प्रदोषतिथि को शिव-अर्चना में । जो भी उसे रथ-गजेन्द्र-त्रंग-युक्ता लक्ष्मी स्थिरा शुभमुखी नित शम्भु देता ।।१५।।

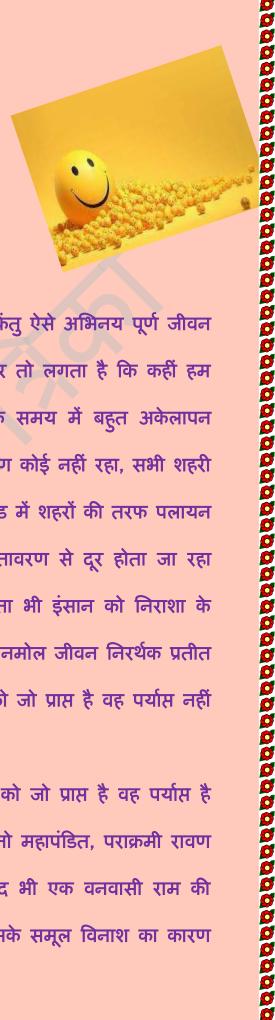
ॐ नमः शिवाय ॥



संकलनकर्ता - श्री नागेश मिश्र प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक - संस्कृत

# जीवन का असली सुख

हमारे जीवन की सहजता आज धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। हम हजार तरह से जी रहे हैं, हमारे अन्तर्मन में क्या चल रहा है और हम बाहर जी कैसे रहे हैं दोनों में बहुत अंतर है।



एक साथ हजार बातें हमारे अंदर चल रही होती हैं किंतु ऐसे अभिनय पूर्ण जीवन में हम स्वयं को ही नहीं पहचान पा रहे हैं। कई बार तो लगता है कि कहीं हम स्वयं को धोखा तो नहीं दे रहे हैं? इंसान आज के समय में बहुत अकेलापन महसूस करने लगा है, आज केवल ग्राम बचे हैं ग्रामीण कोई नहीं रहा, सभी शहरी हो गये हैं। हर व्यक्ति आज भौतिक सुख प्राप्ति की दौड़ में शहरों की तरफ पलायन कर रहा है तथा अपने सामाजिक व पारिवारिक वातावरण से दूर होता जा रहा है। जिस कारण जीवन में मिली छोटी सी असफलता भी इंसान को निराशा के अथाह सागर में धकेल देती है व इंसान को अपना अनमोल जीवन निरर्थक प्रतीत होने लगता है। मगर आज के समय में हर इंसान को जो प्राप्त है वह पर्याप्त नहीं है इसी कारण वह दुखी है।

राम में व रावण में एकमात्र अंतर यही है कि राम को जो प्राप्त है वह पर्याप्त है मगर रावण को जो प्राप्त है वह पर्याप्त नहीं है तभी तो महापंडित, पराक्रमी रावण के पास मंदोदरी जैसी अपूर्व सुंदरी पत्नी होने के बाद भी एक वनवासी राम की पत्नी को पाने की लालसा में निकल पड़ता है जो उसके समूल विनाश का कारण

बनता है। एक महान दार्शनिक ब्रेन्टानो कहते हैं कि "जो हमारे पास है वो हमे नजर नहीं आता, मगर जो नहीं है वो बहुत बड़ा होकर नजर आता हैं" इसीलिए हम जो हमारे पास है उसमें खुश नहीं रह पाते व अन्य बहुत सा पाने की लालसा में लगे हए हैं। एक बह्त प्रसिद्ध पंक्ति भी मुझे याद आ रही है कि द्निया जिसे कहते हैं वो जादू का खिलौना है मिल गया सो मिट्टी है और ना मिला वो सोना है।

अगर हम हमारे पास क्या है उसकी सूची बनायेंगे तो यकीन मानिए आपकी डायरी के पन्ने कम पड़ जायेंगे ,ये लिखते-लिखते कि आपके पास क्या कुछ नहीं है जो बेचारे बह्त लोगो को तो नसीब भी नहीं होता 🕒

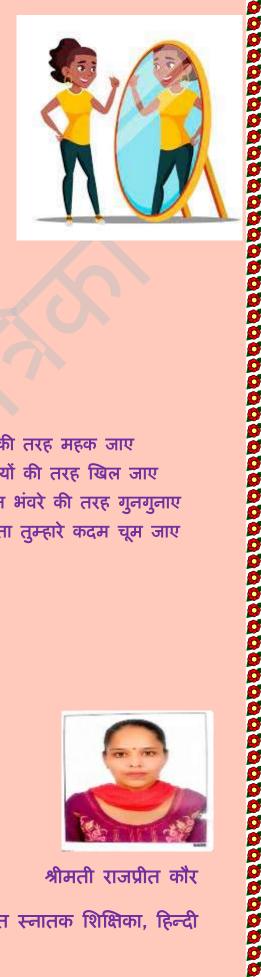
द्निया में कितनी ही तकलीफ व असफलता मिल जाये मगर उन सबसे बडी बात ये है कि असफलता तो जीवन का एक भाग है मगर सबसे महत्त्वपूर्ण है हमारा जिंदा रहना, क्योंकि हम हैं तो ही सफलता असफलता का महत्त्व है, जबकि हमारी उम्र के लोग श्मशान में जल रहे होते हैं हम कम से कम जिंदा तो हैं । अगर ये भाव हमारे अंदर आ गये तो यकीन मानिए जीवन का आनंद हमें खुद ब खुद आने लगेगा ।



श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिन्दी

# खुद से करती रहती बातें

खुद से करती रहती बातें जाने कितनी बीती रातें तुमको ऐसे नहीं ऐसे है करना। अभी नहीं कोई दम भरना मेहनत हरदम करते रहना मेहनत तेरी रंग लाएगी खुशियों का दामन भर लाएगी आंख में आंसू नहीं है भरना तुम्हें अभी बहुत कुछ है करना संघर्ष ही तो है आगाज जीवन का अभी तुम्हें है और निखरना



कोशिश करो कि जीवन फूलों की तरह महक जाए मेहनत करो कि हर दिन कलियों की तरह खिल जाए खुद से प्यार करो कि हर मन भंवरे की तरह गुनगुनाए खुद को अर्पण करो कि सफलता तुम्हारे कदम चूम जाए

एक इरादा तो करो कि मंजिल खुद पास आएगी एक कदम तो चलो कि तुम्हारी मेहनत रंग लाएगी एक वादा तो करो स्वयं से पूरी कायनात मिल जाएगी खुद को अर्पण तो करो कि खुशियों से झोली भर जाएगी खुद पर विश्वास तो करो कि पूरी जिंदगी बदल जाएगी..



श्रीमती राजप्रीत कौर

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका, हिन्दी

### "सब बढ़िया है"

अपने दुःख दर्द छिपाने का, बस बचा एक ही जरिया है जब पूछें कोई कैसे हो, हम कह देते सब बढ़िया है चेहरे पर मुस्कान लिए, वाणी में रहते रस घोले स्वप्न सरीखा यह जीवन, जो सरक रहा हौले हौले अशु किन्हें हम दिखलाएँ, किस से हम मन की बात कहें बेहतर लगती पीड़ा अपनी, भीतर अपने चुपचाप सहें कुछ पीड़ा सुन मुसकाएँगे, कुछ नमक छिड़क कर जाएँगे कुछ पाप पुण्य का लगा गणित, पापों का फल हमें बताएँगे किस की जिह्ना हम पकड़ेंगे, किस किस के होंठ सिलाएँगे ऐसा बोला तो क्यों बोला, किस किस से लड़ने जायेंगे चुपचाप सुनेंगे तानों को, दिल अपना भी इक दरिया है फिर पूछेगा जब हाल कोई, तो कह देंगे " सब बढ़िया है।





सुश्री लीनु, प्राथमिक शिक्षिका

### शिक्षा का महत्व

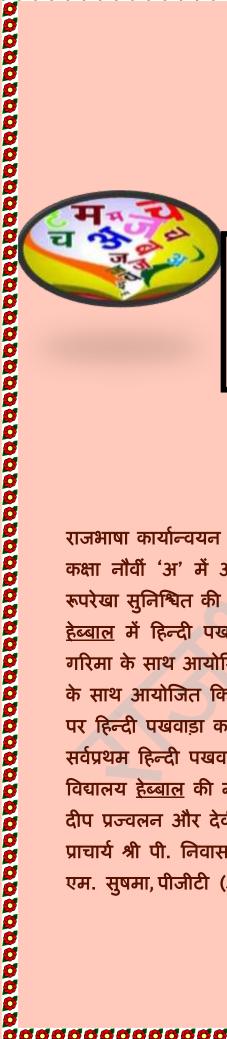


अति आवश्यक होती शिक्षा, अंधकारमय अज्ञान को दूर भगाती शिक्षा । सारे बेजान में नई स्फूर्ति कौशलता प्रदान करती शिक्षा, पर कभी न पूर्ण होती शिक्षा। शिक्षा प्राप्त कर ही लोग बनते हैं, डॉक्टर, वकील, बाबू, शिक्षक और अधिकारी। रोज बदलती है दुनिया को, अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों का बोध और सर्वोपरि सम्मान दिलाती शिक्षा । बुद्धिहीन को बुद्धि प्रदान करती, अज्ञानी को ज्ञान । शिक्षा से बन सकता है, भारत विश्व-गुरु प्रधान। जय भारत





श्री रघुनाथ सिंह सह-कर्मचारी







## प्रतिवेदन

### दिनांक:-14/09/23 से 28/09/23

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 30/08/23 को अपराहन 2:15 बजे कक्षा नौवीं 'अ' में आयोजित की गयी तथा हिन्दी पखवाड़ा के कार्यक्रम की रूपरेखा सुनिश्चित की गई। शैक्षणिक सत्र 2023-2024 के लिए केन्द्रीय विद्यालय हेडबाल में हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन प्रातःकालीन सभा में बड़ी धूमधाम और गरिमा के साथ आयोजित किया गया। समारोह पूरी निष्ठा, जुनून, जोश और उत्साह के साथ आयोजित किया गया। यह इस दिवस की विशेषता रही कि एक ही मंच पर हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन एवं अलंकरण समारोह मनाया गया। सर्वप्रथम हिन्दी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह का प्रारंभ मुख्य अतिथि, केन्द्रीय विद्यालय हेडबाल की नामित अध्यक्ष ग्रुप कैप्टन शक्ति शर्मा के कर कमलों से दीप प्रज्वलन और देवी सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ जिसमें प्राचार्य श्री पी. निवास राजू और विद्यालय की वरिष्ठतम शिक्षिका श्रीमती टी. एम. सुषमा, पीजीटी (अर्थशास्त्र) का भी योगदान रहा।





तत्पश्चात हिन्दी विभाग की संयोजिका श्रीमती ज्योति द्वारा राजभाषा हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला गया। संयोजिका द्वारा राजभाषा की संवैधानिक एवं भौगोलिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि किसी देश की कोई भाषा राजभाषा और राष्ट्रभाषा का दर्जा कब प्राप्त करती है। आखिर राजभाषा के रूप में हिन्दी को ही क्यों चुना गया, राजभाषा के महत्व का उल्लेख करते हुए हिन्दी भाषा के गुण और धर्मों का बोध कराया। तदोपरांत विद्यालय की होनहार बालिकाओं द्वारा एक बह्त ही मनमोहक गणेश स्तुति पर शानदार समूह नृत्य प्रस्तुत किया।



उसके उपरांत प्राचार्य ने हिन्दी के वैश्विक महत्व पर अपने विचार प्रकट किये। मुख्य अतिथि, केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल की नामित अध्यक्ष ग्रुप कैप्टन शक्ति

शर्मा ने सर्वप्रथम सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ दीं, राजभाषा हिन्दी के बारे में बताया, साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि सभी भाषाओं का अपना महत्त्व होता है एवं बहुभाषी होना हमारे व्यक्तित्व में निखार ही लाता है।



अंत में विद्यालय की खेलकूद कप्तान प्राची द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इस प्रकार हिन्दी पखवाडा का उद्घाटन समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। हिन्दी पखवाड़ा की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि विद्यालय के अहिन्दी भाषी शिक्षक-शिक्षिकाओं के अंदर हिन्दी के प्रति अगाध स्नेह और प्रेम हिलोरे ले रहा था। हिन्दी भाषा में प्रातःकालीन प्रार्थना-सभा में कार्यक्रम प्रस्तुत करने की होड़-सी लगी थी। यह बड़ा अभूतपूर्व अनुभव रहा |

क्षेत्रीय कार्यालय के पत्रानुसार सितम्बर माह में कभी भी हिन्दी प्रतियोगिता का आयोजन कर सकते हैं और चूँकि विद्यालय में 14/09/23 के पश्चात् विभिन्न दिनांक में कई गतिविधियाँ पूर्व निर्धारित थीं, अतः प्रतियोगिताएं का आयोजन सितम्बर माह के प्रारंभ से ही किया गया। दिनांक-01-09-23 को कक्षा 6 के विद्यार्थियों के लिए कक्षावार सुलेख लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक-01-09-23 को ही कक्षा-7 एवं 8 के लिए सुविचार एवं सूक्तियां लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जहाँ कक्षा- ७ का विषय 'स्वच्छता' एवं कक्षा-८ का विषय 'हिन्दी भाषा का महत्व' सुनिश्चित किया गया।













दिनांक-07-09-23 को कक्षा-9 एवं कक्षा-10 के लिए निबंध-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का संचालन स्नातकोत्तर शिक्षिका हिन्दी एवं हिन्दी विभाग की संयोजिका श्रीमती ज्योति द्वारा किया गया।



दिनांक-08-09-23 को सदनवार हिन्दी काव्य-पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का संचालन श्रीमती ज्योति द्वारा किया गया। काव्य पाठ में विषय के रूप में विद्यार्थियों ने सामाजिक समस्याओं से जुड़े मुद्दे को लिया एवं बहुत ही उत्साह, हाव-भाव एवं आरोह-अवरोह के साथ काव्य का वाचन किया।



दिनांक-14/09/23 को विद्यालय के प्राचार्य ने सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनायें दी एवं हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर गृह मंत्रालय द्वारा प्रेषित राजभाषा प्रतिज्ञा का पठन किया और सभी कर्मचारियों ने उसका अनुसरण करते हुए राजभाषा प्रतिज्ञा ली |



दिनांक-14-09-23 को कक्षा-9 एवं 10 के लिए सदनवार प्रश्न-मंच प्रतियोगिता का आयोजन आखरी दो कालांश में किया गया। प्रतियोगिता का संचालन श्री इन्द्रसहाय माली एवं श्रीमती प्रिया द्वारा किया गया।

प्राचार्य महोदय द्वारा विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया | इस प्रकार केन्द्रीय विद्यालय हेब्बाल में हिन्दी पखवाड़ा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

संयोजिका श्रीमती ज्योति

प्राचार्य श्री पी श्रीनिवास राज्